साई व्हाइब्रियोनिक्स पत्रिका

www.vibrionics.org

'' जब आप किसी हतोत्साहित, निराश या रोग ग्रस्त व्यक्ति को देखते हो,
वहीं आपका सेवा क्षेत्र है ''..... श्री सत्य साई बाबा

खण्ड 5 प्रकाशन 1.5 सम्मेलन विशेषांक फरवरी 2014

ॐ सांई व्हाइब्रियोनिक्स अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ॐ

पुट्टपर्ती, जनवरी 25–27, 2014

सिंहावलोकन

सांई व्हाइब्रियोनिक्स के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं प्रदर्शनी हेतु पंजियन की प्रक्रिया, प्रतिनिधियों द्वारा प्रशांति निलयम मे, दिनांक 25 जनवरी को पूर्ण की गई।

दिनांक 26 जनवरी को स्वामी के पुराने मंदीर मे आयोजित उद्घाटन समारोह मे सहभागी होने वालों का स्वागत, फुलों से सजे मंच पर विराजमान वरदहस्त मुद्रा वाली स्वामी की तस्वीर ने किया (चित्र देखें)। मंच पर चिकित्सा की ग्रीक देवता एस्लेपिअस तथा हीपोक्रिटस की मूर्तीयां भी रखी गई थी। **भगवान श्री सत्य सांई बाबा** की तस्वीर पर फूलमालाओं के साथ शोभायमान सम्मेलन का अधिकृत बैज मानो यह दर्शा रहा था की वें सम्मेलन के सबसे महत्वपूर्ण अतिथी है। महाकक्ष मे स्वामी की उपस्थिती निर्विवाद थी। मंदीर के प्रेम से घिरे पवित्र वातावरण मे, प्रेमभाव से मरीजों की शुश्रुषा के प्रति कटिबद्धता के प्रमाण स्वरुप किए जा रहे हर प्रस्तुतीकरण मे स्वामी की रहमत महसूस हो रही थी। भारत के साथ साथ समूचे विश्व के अनेक देशों मे, सांई व्हाईब्रियोनिक्स के माध्यम से भारी तादाद मे हो रहे असामान्य रोग निवारण की घटनाओं के विवरण, आखिरकार, स्वामी की इच्छा शक्ती का प्रमाण दे रहे थे।

सन्माननीय अतिथि

स्वामी ने सम्मेलन की कार्रवाई को अनोखे मार्ग से अनुग्रहित किया। इस पावन स्थान पर हुई सभा मे, विशिष्ट अतिथि **श्री आर. जे. रत्नाकर** एवं प्रमुख अतिथि **न्यायमूर्ती श्री ए. पी. मिश्रा** को, उदघाटक वक्ता के रुप मे पाने का परम सौभाग्य सम्मेलन को प्राप्त हुआ। दोनो हि अतिथि श्री सत्य सांई सेन्ट्रल ट्रस्ट के सदस्य है। दोनो वक्ताओं ने सम्मेलनका सूर उच्च आध्यात्मिक स्तर पर पहुंचा दिया। अन्य सन्माननीय अतिथि थे **श्री व्ही. श्रीनिवासन**, अखिल भारतीय अध्यक्ष, श्री सत्य सांई सेवा संगठन, **श्री टी. के. के. भागवत,** सदस्य, सेंन्ट्रल ट्रस्ट तथा **डॉ. माईकेल रेकॉफ**, **एम.डी.,** प्रबंधन सलाहकार, श्री सत्य सांई इन्स्टीटयूट ऑफ हायर मेडीकल सायन्सेस। इनके अलावा दक्षिण अफ्रिका की सोहम फाउन्डेशन के स्वामी आनंदा (चित्र देंखे) ने विशेष अतिथि के रुप मे पधारकर सभा को प्रफुल्लित किया एवं दो बार संबोधित भी किया। **श्री के. चक्रवर्ती**, सदस्य सेंन्ट्रल ट्रस्ट ने विशेष रात्रीभोज के विशिष्ट अतिथि का निमंत्रण स्वीकार कर सम्मेलन की शान बढायी। सेंन्ट्रल ट्रस्ट की सभा मे व्यस्तता के कारण उनकी रात्रीभोज मे अनुपस्थिती से प्रतिनिधियों को अवश्य दुख हुआ।

चिकित्सकों के अनुभव

सम्मेलन हेतु पुट्टपर्ती पहुंचे सारे प्रतिनिधियों से पुराना मंदीर खचाखच भर गया था। 18 देशों से कुल 342 प्रतिनिधि आए थे जिनमे भारतीय राज्यों के 278 एवं अन्य देशों के 64 प्रतिनिधि थे। स्वामी ने सारे भेद मिटा दिए ताकि प्रेममय सेवां से जुडे विषय पर एक सूत्र मे बंधे चिकित्सक, खुले दिल से विचारों का आदान प्रदान कर सके। इसके फलस्वरुप यह सम्मेलन केवल एक औपचारिकता न रहकर, पारिवारिक समारंभ बन गया। इस अनपेक्षित वरदान से सम्मेलन अधिक हर्षपूर्ण हो गया।

सम्मेलन के दौरान पंद्रह चिकित्सकों ने प्रस्तुतीकरण किया। अधिकाधिक ग्रहण करने की चाह मे उपस्थित चिकित्सकोनें पूरी एकाग्रता के साथ उन्हे सुना, फिर प्रश्नोत्तर सत्र का पूरा लाभ उठाया। अधिकारीक गतिविधियों के अलावा, अनौपचारिक रुप से भी पारस्परिक चर्चा का मौका चिकित्सकों ने हाथ से जाने न दिया। चिकित्सकों ने दूर देशों से आए उनके व्हाइब्रियोंनिक्स परिवार के सदस्यों को जानने मे कोई विलंब नही किया। जो चिकित्सक पहले कभी नही मिले थे, भिन्न जगहों से आए थे, औपचारिकताओं को किनारे रखकर इलाज संबंधी सुझावों एवं विशिष्ट रेमेडी के परिणामों पर विचारों तथा वैयक्तिक अनुभवों का आदान प्रदान कर रहे थे। इस पारस्परिक चर्चा ने मानो सम्मेलन को पूरे 24 घंटो का सत्र बना दिया!

स्वामी की लीला

सम्मेलन की समाप्ती के साथ, पूराने मंदीर मे रिचार्जीन्ग किये जा रहे 108 काम्बो के एक बक्से पर विभूति सृजित कर, स्वामी ने सम्मेलनकी कार्रवाई को और भी अनुग्रहित कर दिया। एक भारतीय चिकित्सक ने झुककर जैसे हि अपने बक्से को देखा, उन्हे अंतिम पंक्ति की बोतलों पर विभूति नजर आयी (चित्र देखे)। यह दैवी लीला देखने का सौभाग्य अन्य चिकित्सकों को भी प्राप्त हुआ। स्वामी ने '' पुट्टपर्ती मे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होगा '' यह घोषणा सन 2007 मे की थी। न केवल स्वामी ने उसे सार्थक कर दिखाया बल्कि अपना वैयक्तिक भेट कार्ड भेजकर इस आरम्भिक मेले को स्वीकृति प्रदान की तथा सांई व्हाइब्रियोनिक्स पर उनके 'दैवि कंपनों' के अविरत वर्षाव की पुष्टि की।

कार्रवाई तथा व्हिडिओ चित्रण

सम्मेलनकी कार्रवाई पुस्तक रुप मे प्रकाशित की जा चुकी है। डॉ. जीत के. अग्रवाल द्वारा संकलित एवं संपादित '' *Proceedings of the 1st International Conference of Sai Vibrionics*'' सचित्र खंड इस दौरान स्वामी को समर्पित किया गया एवं अन्य चिकित्सकों के लिए भी उपलब्ध कराया गया। इस पुस्तक मे 85 भारतीय तथा 16 विदेशी चिकित्सकों के चुनिंदा लेख सम्मिलित किये गए है। हमे इस पुस्तक द्वारा सम्मेलन मे सामिल किये गए प्रस्तुतीकरणों के अलावा अनुपस्थित चिकित्सकों तथा समय के अभाव मे जिनका प्रस्तुतीकरण सम्मेलन मे सामिल नही किया जा सका उनके कार्य की भी जानकारी प्राप्त होगी। यह पुस्तक, चिकित्सकों के सांई व्हाइब्रियोनिक्स कार्य के, बीस वर्षों के अभूतपूर्व प्रयासों के अनुभव का फल बडे पैमाने पर बांटने का प्रतिनिधित्व करता है। इसमे प्रकाशित लेख व्हाइब्रो सेवकों के लिए जानकारी का खजाना है। उद्येश्य केवल यही है कि सभी स्तर के चिकित्सक लाभान्वित हो ताकि मरीज को सर्वोत्तम इलाज दिलाने की काबिलियत निर्माण हो तथा विश्वभर मे व्हाइब्रियोनिक्स के क्षेत्र मे हो रहे चुनिंदा विकास कार्यो कि जानकारी उन तक पहुंच सके। इसके अलावा यह पुस्तक उन स्वास्थ्य चिकित्सकों एवं सांई व्हाइब्रियोनिक्स के उद्गम, विकास एवं वर्तमान कार्यप्रणाली के गहन अध्ययन की चाह रखने वालों के लिए भी संसाधन स्वरुप है। यह भी विदित हो कि इस पुस्तक के वर्तमान खंड मे प्रकाशित लेखों के अलावा, बहोतसी मूल्यवान प्रस्तुतीयां विलंब से प्राप्त होने की वजह से सामिल नही की जा सकी। नजदीकी भविष्य मे इन्हे भी संकलित एवं प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तक के साथ साथ चौदह मिनट की 'What is Sai Vibrionics' शीर्षक वाले व्हिडिओ चित्रण भी स्वामी को समर्पित किया गया। यह व्हिडिओ डिव्हिडि के रुप मे प्रतिनिधियों के लिए उपलब्ध करायी गई। इस व्हिडिओ का निर्माण पोलंड के वरिष्ट चिकित्सक श्री डाइरुझ हेबिझ ने किया तथा कथन इग्लैन्ड निवासी डॉ. सुनील अग्रवाल ने किया। इस फिल्म मे व्हाइब्रियोनिक्स के विकास की गाथा तथा सांईराम हिलिंग व्हाइब्रेशन्स पोटेन्टइझर के कार्यपद्धति की जानकारी दी गई है। इस फिल्म के माध्यम से अपने मरीजों तथा अन्य लोगों को व्हाइब्रियोनिक्स की जानकारी देने मे चिकित्सकों को बडा लाभ होगा।

प्रदर्शनी

कर्नल समीर बोस द्वारा तख्ते, नक्शों व तस्वीरों के सहारे सांई व्हाइब्रियोनिक्स के उद्गम को दर्शाने वाली *Sai Vibrionics around the World* नामक प्रदर्शनी सम्मेलन मे रखी गई थी। प्रदर्शित सामग्री मे भारत तथा विदेशों मे आयोजित सांई व्हाइब्रियोनिक्स प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा चिकित्सा शिबिरों की तस्वीरें भी सामिल थी।

आयोजन बना मील का पत्थर

कुल मिलाकर पहला अंतर्राष्ट्रिय सांई व्हाइब्रियोनिक्स सम्मेलन मील का पत्थर बना। हम आशा करते है कि यह सम्मेलन व्हाइब्रियोनिक्स के अगले चरण अर्थात चिकित्सकों के बीच आपसी सहयोग वृद्धिंगत करने एवं सर्वोत्तम अनुशीलन के विकास तथा सांई व्हाइब्रियोनिक्स के प्रति विश्व भर मे जागरुकता निर्माण करने मे प्रेरक सिद्ध होगा। अब तक कुल 4500 चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया गया है तथा 1.8 दशलक्ष से भी अधिक मरीजों का इलाज किया जा चुका है, फिर भी अनगिनत जरुरतमंद इलाज की प्रतिक्षा मे है।

प्रतिनिधियों ने स्वामी से आशिर्वाद पाकर सम्मेलन से बिदाई ली तथा उत्साह और विश्वास के साथ, स्वामी ने उन पर सौपे प्रेममय कार्य को, निःस्वार्थ भाव से करने का दृढसंकल्प लेकर अपने अपने सेवा क्षेत्र की ओर लौट गए।

सम्मेलन कार्यक्रम
रविवार, दिनांक 26 जनवरी 2014

दो चिकित्सकों ने आकर्षक फूलों और हरियाली द्वारा सजाए पवित्र पेदा वेंकम्मा राजू कल्याण मंडपम मे सुबह सुबह सारे प्रतिनिधि एकत्रित हुए। ठीक 8 बजे तीन ओंकार के साथ सम्मेलन का शुभारंभ हुआ फिर छ चिकित्सकों ने छ मिनट का वेद पठन प्रस्तुत किया।

दीप प्रज्वलन एवं सम्मेलनके संयोजन हेतु सन्माननीय अतिथि गण **श्री आर. जे. रत्नाकर**, प्रमुख अतिथि न्यायमूर्ती **श्री ए. पी. मिश्रा**, **श्री व्ही. श्रीनिवासन**, **श्री टी. के. भागवत**, **स्वामी आनंदा** तथा **डॉ. माइकेल रेकॉफ** को मंच

पर आमंत्रित किया गया। सम्मेलन की कार्रवाई के पुस्तक का विमोचन **न्यायमूर्ती श्री ए. पी. मिश्रा** ने रिबन कांट कर किया। तत्पश्चात *What is Sai Vibrionics?* व्हिडिओ के ईश्वरार्पण हेतु पोलंड के वरिष्ट चिकित्सक एवं प्रशिक्षक/समन्वयक श्री डाइरुझ हेबिझ को आमंत्रित किया गया। हमारी अधिकृत वेबसाइट पर यह व्हिडिओ उपलब्ध की जाएगी।

प्रथम सत्र

स्वागत भाषणः डॉ. जीत के अग्रवाल

समारोह की संचालिका **सुश्री सुझान सलीवन–रेकॉफ**, वें अमरीकी व्हाइब्रियोनिक्स प्रशिक्षक/समन्वयक तथा सांई व्हाइब्रियोनिक्स पत्रिका की सम्पादक महोदया है, उन्होने सांई व्हाइब्रियोनिक्स के संस्थापक एवं निदेशक **डॉ. जीत के अग्रवाल** को स्वागत भाषण हेतु मंच पर आमंत्रित किया। डॉ. अग्रवाल ने सभी उपस्थितों का स्वागत करते हुए स्वामी से कृपाशिर्वाद मांगे। अपने भाषण *सांई के नेतृत्व मे व्हाइब्रियोनिक्स का विकास* मे डॉ. अग्रवाल ने बताया कि उन्हे बहोत आश्चर्य हुआ था जब स्वामी ने अप्रैल 2007 मे साक्षात्कार के दौरान पुट्टपर्ती मे व्हाइब्रियोनिक्स का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होने की बात कहीं थी। स्वामी के वचन निरर्थक नही थे आज उन वचनों कि पूर्ती हो रही है। अंतिम क्षणों मे सम्मेलन के लिए प्रतिनिधियों का बहोत अधिक सहकार्य प्राप्त हुआ। महत प्रयासों से तथा अनेक सहयोगीयों की मदद से आयोजन को मूर्त स्वरुप प्राप्त हुआ। व्हाइब्रियोनिक्स के विकास मे स्वामी की भूमिका एवं हर पल मिले मार्गदर्शन संबंधी अपने वैयक्तिक अनुभवों का डॉ. अग्रवाल ने जिक्र किया। उदाहरण के तौर पर – स्वामी ने अनेक साक्षात्कारों के दौरान सांईराम हिलींग व्हाइब्रेशन्स पोटेन्टाइजर मशीन मे जतायी हुई दिलचस्पी तथा सन 1994 मे डॉ. अग्रवाल द्वारा विकसित मूल मॉडेल को प्रदान किए कृपाशीष एवं सन 1996 मे सुधारित छोटे मॉडेल की सराहना के विषय मे डॉ. अग्रवाल ने जानकारी दी। व्हाइब्रियोनिक्स मे केवल स्वामी के दैवि कंपन समाए है यह घोषणा स्वयं स्वामी ने सन 1998 मे की। उन्होने कई बार डॉ. अग्रवाल को सूचना दी कि वें व्हाइब्रियोनिक्स का प्रशिक्षण देकर आश्रम के बाहर तथा विदेशों मे इसका प्रचार करे। सन 2008 मे स्वामी ने कॉमन कॉम्बो बक्से को कृपाशीष प्रदान किए। सन 2011 मे भी, अस्पताल मे भरती होने से कुछ दिन पूर्व स्वामी ने पुष्टि की थी कि सांई व्हाइब्रियोनिक्स को सांई संगठन मे जारी रखा जाए। डॉ. अग्रवाल ने सभी चिकित्सकों को सम्मेलन के माध्यम से एक–दूसरो से कुछ सीखने के इस सुवर्ण अवसर का लाभ उठाने की सलाह दी। सेवा की अभिलाषा रखने वाले सभी चिकित्सकों को स्वामी से मार्गदर्शन जारी रखने की प्रार्थना के साथ डॉ. अग्रवाल ने अपना भाषण समाप्त किया।

उद्घाटन भाषणः श्री आर. जे. रत्नाकर

डॉ. अग्रवाल द्वारा श्री आर. जे. रत्नाकर को सम्मेलन के उद्घाटन भाषण हेतु आमंत्रित किया गया। श्री रत्नाकर ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन संबंधी सन 2007 मे स्वामी के कथन का हवाला देते हुए अपना भाषण प्रारंभ किया। उन्होने जोर देकर कहां कि स्वामी चाहते है कि हम यह समझले कि स्वामी के शब्दों मे उच्च फ्रिक्वेन्सी की व्हाइब्रेशन्स होती है और वास्तव मे वैसा हि होता है। श्री रत्नाकर ने स्वीकार किया कि उन्हे जरा भी अंदाजा नही था कि यह सम्मेलन कैसा होगा, वें सोच रहे थे कि यह कोई प्रशिक्षण वर्ग होगा। उन्होने कभी सोचा ही नही कि यह आयोजन इतना जोशपूर्ण होगा। व्हाइब्रियोनिक्स का पर्चा पढकर उन्हे दो बातें समझ मे आयी; पहली बात – व्हाइब्रियोनिक्स सेवा करने के लिए पवित्र हृदय चाहिए, यद्यपि इस दुनिया मे कुछ भी करने के लिए पवित्र हृदय चाहिए क्योंकि लक्ष्य तक पहुंचाने वाले दृढसंकल्पों की निर्मिती पवित्र हृदय से हि होती है। दूसरी बात यह कि मरीजों का रोग निवारण स्वामी कर रहे है, इससे विपरित कुछ भी सोचना भ्रम है।

श्री रत्नाकर ने अपना कुछ वर्ष पूर्व का अनुभव कथन किया जब वें गंभीर दुर्घटना के फलस्वरुप चार हप्तों के लिए सुपर स्पेशिलिटि अस्पताल के आई. सी. यू. मे भरती थे। उन्हे देखने भगवान वहां जाते थे। यद्यपि श्री रत्नाकर को बहु अस्थि भंग के साथ पांव मे गंभीर चोट लगी थी, उन्हे जरा भी दर्द महसूस नही हो रहा था। हड्डीयों के चूर चूर होने के बावजूद भी स्वामी उन्हे दुर्घटना के दिन से हि यह पूंछकर आश्वस्थ कर रहे थे कि ''चलने कब लगोगे?''और आज वें स्वामी की कृपा से चल रहे है। वें इस हद तक स्वस्थ हो चुके है कि गत वर्ष अपने बेटों के साथ सैर करते हुए गोलकोंडा किले की 600 पायरीयां चढ गए। उपर पहुंचकर उन्होने सर्वप्रथम स्वामी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

श्री रत्नाकर आगे बलपूर्वक कहते है कि यह दैवि भाव है। एक बार आपमे दैवि भाव प्रस्थापित हो जाए तब वह बदलता नही है और न हि कम होता है बल्कि बने रहता है। स्वामी ने हम सभी को उनका प्रेम दिया है, वहीं कंपन हमे दिए है जिनके द्वारा उन्होने चराचर की प्रत्येक वस्तू मे उर्जा और प्रेम भर दिया है। श्री रत्नाकर ने दर्शन के दौरान घटी एक घटना का स्मरण कराया जिसके वे साक्षी थे। मलेशिया के एक सक्श गत 9 वर्षों से स्ट्रेचर पर थे, स्वामी के उनके पास आकर ''आप फिर चलने लगोगे'' यह कहते हि वह व्यक्ति खडा हो कर सबके समक्ष चलने लगा। स्वामी के कंपनों मे ऐसी शक्ती थी कि उनका स्पर्श, उनके वचन ही रोग निवारण करने का सामर्थ्य रखते थे। ऐसी अनेक घटनाओं के वे साक्षी रहे है।

अंत मे श्री रत्नाकर ने व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सकों को एक संदेश दिया कि स्वामी को मैने जितना जाना है उस अनुसार लोगो के चयन मे स्वामी ही जानते है कि क्यां अधिकं महत्व पूर्ण है। हर पादान पर मार्गदर्शन पाने के लिए तथा समय समय पर कृपाशीष ग्रहण करने हेतु स्वामी द्वारा डॉ. अग्रवाल के चयन मे श्री रत्नाकर ने वही विश्वास जताया। सभी उपस्थित चिकित्सकों को संबोधित करते हुए श्री रत्नाकर बोले कि स्वामी आज भी इस अदभुत रोग निवारण पद्धति को तथा आप सभी को अपने कृपाशीष प्रदान कर रहे है। आपका चयन स्वयं भगवान ने किया है। आज लाखों पीडीत लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए, मदद, प्रेम और देखभाल कि आवश्यकता है। सांई भक्त तथा एक व्हाइब्रो चिकित्सक के रुप मे सांई नाम से जुडे होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि इस अदभुत कार्य को हम पवित्र हृदय से करे। श्री रत्नाकर आगे कहते है ''मै स्वामी से प्रार्थना करता हुं कि इस पद्धति को ग्रह पर विद्यमान समस्त जीवों तक पहुंचाने हेतु आवश्यक कंपन आप सभी को प्रदान करे ताकि स्वयं भगवान का प्रेममय साम्राज्य इस धरती पर उतरे। श्री रत्नाकर ने सभी से प्रश्न किया कि जब 6–7 वर्ष पूर्व स्वामी ने सम्मेलन का संकल्प किया था, हम क्यों न माने कि प्रतिनिधि कौन होंगे यह भी तय था? दृढता के साथ इस सम्मेलन मे सीखी बातों को जरुरत मंदो तक फैलाने हेतु मै आपको प्रेरणा देता हुं।

हितोपदेशः न्यायमूर्ती श्री ए. पी. मिश्रा

न्यायमूर्ती श्री ए. पी. मिश्रा को सम्मेलन के प्रमुख अतिथि के रुप मे हितोपदेश हेतु आमंत्रित किया गया। दिव्य कार्य के लिए तथा दैवि मूल्यों के लिए सम्मेलन मे एकत्रित हुए इन महान श्रोतागणों के बीच भाषण का मौका प्रदान करने हेतु अग्रवाल दम्पति को उन्होने धन्यवाद दिया। न्यायमूर्ती मिश्रा ने टिप्पणी देते हुए कहां कि स्वामी से आशिष पाकर आप सभी चिकित्सकों का जीवन सार्थक हुआ है। शुरुआती दिनों मे जब प्रतिजैविक (एन्टीबायोटीक्स) उपयोंग मे आए, अस्पतालों का निर्माण हुआ, सभी को लगा कि अब बीमारीयों का समाधान मिल चुका है, परंतु किसी ने भी नही सोचा था कि इन्हे शरीर मे प्रवेशित करने से समस्याए बढेगी। न्यायमूर्ती मिश्रा ने सम्मेलन की पूर्व नियोजित भविष्यवाणी के लिए स्वामी के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया। उन्होने सम्मेलन स्थल के रुप मे स्वामी का पुराना मंदीर चुने जाने के बारे मे कहां कि यह स्थान स्वामी के जन्म स्थान के निकट होने के कारण कंपायमान है। स्वामी का कार्य भी यहीं से प्रारंभ हुआ। अदभुत अवतार के उगम स्थान से सम्मेलन की शुरुआत होना इस बात का संकेत है कि व्हाइब्रियोनिक्स लंबे समय तक सफलता प्राप्त करेगी। न्यायमूर्ती मिश्रा ने कंपनों मे निहित सच्ची रोग निवारक शक्ती मे दृढ विश्वास व्यक्त किया।

व्हाइब्रियोनिक्स को व्यापक परिवेश मे रखते हुए उन्होने समझाया कि अखिल ब्रम्हाण्ड कंपनो से भरा है। इन मानवजाति के लिए सहायक कंपनों का व्हाइब्रियोनिक्स एक मर्यादित हिस्सा है। अर्थपूर्ण ढंग से न्यायमूर्ती मिश्रा ने गतिशील ब्रम्हाण्ड का चित्र रंगाते हुए कहां कि पृथ्वी सूर्य के इर्द गिर्द तथा सूर्य आकाशगंगा मे भ्रमण करता रहता है। सभी आकाशीय तत्व अत्यधिक गती से लंबी दूरीयां तय करते रहते है। ब्रम्हाण्ड की उर्जा अनंत है। स्वामी ने पृथ्वी पर अवतार ले कर यह प्रमाण दिया है कि हम सभी उर्जामय है तथा कंपनों की शक्ती हर भक्त मे विद्यमान है। अतः चिकित्सकों ने व्हाइब्रियोनिक्स उपचार करते समय इस बात को महसूस करना चाहिए कि वें किसी दूसरे कि मदद नही बल्कि स्वयं को विकसित कर रहे है। वें मानव जाति कि नही बल्कि स्वयं की सेवा कर रहे है। उन्होने प्रेमभाव से की गई सेवा के परिणाम का एक उदाहरण इस प्रकार दिया। मदर तेरेसा के करुणापूर्ण कार्यो के साथ जुडे विद्यार्थियों के रक्त परिक्षण मे असंक्राम्य तत्व की मौजुदगी पायी जाना उनकी बढी ताकद का ही प्रमाण है। भक्ति, समर्पण और शरणागती की भावना से की गई सेवा का यह परिणाम है। न्यायमूर्ती मिश्रा ने सभी चिकित्सकों को सलाह दी कि आप प्रेम और करुणा की पवित्र मूर्ती बनने का प्रयास करें। उन्होंने स्वर्णयुग के आगमन की भविष्यवाणी की। हम कंपनों को बोतलों मे डालने मे सफल हुए है अतः वह दिन दूर नही जब इन कंपनों से सारी बीमारीयों का इलाज संभव होगा। उन्होंने बेहिचक कह डाला कि वह दिन आएगा जब व्हाइब्रियोनिक्स सारी दुनिया मे फैल जाएगा। भाषण के अंत मे न्यायमूर्ती मिश्रा ने सम्मेलन मे स्वयं की उपस्थिती के लिए कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया। उन्होने सभी उपस्थित चिकित्सकों को सौभाग्यशाली कहते हुए विश्वास जताया कि स्वामी इस आयोजन को अवश्यहि सफल बनाएंगे और आप सब इसके साक्षी होंगे। उन्होंने सभी चिकित्सकों को शुभेच्छाए देकर अपनी वाणी को विराम दिया।

न्यायमूर्ती मिश्रा के भाषण पश्चात सभी विशेष अतिथियों को *Sai Vibrionics around the World* प्रदर्शनी की रिबन कांटकर शुभारंभ की घोषणा हेतु आमंत्रित किया गया।

हॉल के बाहर रिबन कांटी जा रही थी उसी समय भीतर सभी प्रतिनिधि आंठ मिनट अवधी के श्री डाइरुझ हेबिझ द्वारा निर्मित *The Blessing of Vibrionics* व्हिडिओ का अवलोकन कर रहे थे। सन 2008 – 2010 के दौरान, प्रत्येक गुरुपौर्णिमा के अवसर पर स्वामी ने व्हाइब्रियोनिक्स टीम को केक समर्पण का अवसर प्रदान कर अनुग्रहित किया। तीनों मौकों पर परम कृपालु भगवान ने मोमबत्ती जलायी, केक कांटी और मंदीर मे प्रसाद वितरण के लिए शुभाशिर्वाद प्रदान किए। हम इसे स्वामी द्वारा व्हाइब्रियोन्क्सि को सार्वजनिक रुप से दिए आशिर्वाद मानते है। व्हाइब्रियोनिक्स कार्य सीधे स्वामी के मार्गदर्शन मे हो रहा है यह सच्चाई सभी चिकित्सकों को प्रोत्साहित करती है।

चिकित्सकों की प्रस्तुतीयां

अग्रणी वक्ता के रुप मे सुश्री पॅट हन्ट [00002] **युके** थी जो व्हाइब्रियोनिक्स अनुसंधान की प्रमुख होने के साथ साथ प्रशिक्षक एवं व्हाइब्रियोनिक्स कोअर टीम की वरिष्ठ सदस्या है। वें *My Journey to Vibrionics-Signs of the Unseen* इस विषय पर बोली। कैसे स्वामी ने उन्हे होमिओपॅथि मे धकेला, स्वामी नारायणी एवं स्वामी आनंदा की *Handbook on Healing* उन्हे कैसे प्राप्त हुई और वें अग्रवाल दम्पती को कैसे जानने लगी आदि का वर्णन उन्होने किया। ये लोग उन दिनों व्हाइब्रियोनिक्स के विकास के लिए स्वामी के निरंतर मार्गदर्शन मे थें। व्हाइब्रियोनिक्स के विस्तार के साथ शिबिरों एवं चिकित्सालयों मे सामान्य तौर पर इलाज किए जाने वाले लक्षणो एवं बीमारीयों हेतु कॉमन कॉम्बोस की आवश्यकता महसूस होने लगी। सुश्री हन्ट को जिम्मेवारी दी गई कि वें अनुसंधान कर उन मिश्रणों एवं रेमेडीज को बनाए जिन्हे 108 कॉमन कॉम्बोस मे सामिल किया जा सके। यह कार्य करने के दौरान पूरे समय उन्हे स्वामी की उपस्थिती एवं नेतृत्व का एहसास हो रहा था। उन्होंने अर्निका, कॅलेन्डुला (मेरीगोल्ड) तथा हाइपरीकम (St. John's Wort) के मदर टिन्कचर से जुडे अनुभवों का कथन किया एवं क्षयरोग और रोगबीज (मिआझम) के इलाज संबंधी नई जानकारी पर अर्न्तदृष्टि डाली।

सम्मेलन की फॅसिलिटेटर **सुश्री सुझान सलीवन – रॅकोफ [01339] यूएसए** द्वारा *Impact of Depression & Role of Vibrionics in Healing* इस विषय पर प्रस्तुती की गई। उदासी (डिप्रेशन) के कारणों एवं परिणामों, मन–काया संबंध एवं उन्होने व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सा मे ऐसे मरीजों के साथ अपनायी पद्धति पर वें बोली। मरीजों को वैयक्तिक साधना हेतु प्रोत्साहित करना एवं दिल से दिल का संबंध बनाना, दोनो हि महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा पढें गए लेख मे न केवल लंबे अरसे से उदासी वाले मरीज बल्कि सिगारेट का व्यसन, दिमागी पागलपन तथा आहार विकृति, घुटने मे चोट, जबडे के विकिरण चिकित्सा से हुई अवनति के मरीजों के व्यक्ति वृत्त भी सामिल थे।

सुश्री अकाशा वूड [00135] युएसए, वरिष्ठ चिकित्सक *Probing the Fifth Element*, the Akash, इस विषय पर बोली। आकाश तत्व के व्हाइब्रियोनिक्स मे भूमिका की कल्पना करते हुए उन्होने रेडिओनिक्स से विकसित सांईराम हिलींग व्हाइब्रेशन्स पोटेन्टाइजर मशीन की उत्पत्ति और परिचालन का स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया। पानी पर होने वाले मानवीय विचारों एवं भावनाओं के परिणाम संबंधी डॉ. एमोटो के निष्कर्ष उन्होने प्रस्तुत किए। उनके द्वारा पढे गए लेख मे सुश्री वूड ने स्पास्टीक चोकीन्ग, नेत्रशोथ, स्रावी फटी एडीया, बच्चों मे भयावहता और झल्लाहट, एस्परजर्स सिन्ड्रोम से उभरे अनिद्रारोग और चिंता, बवासीर एवं बदहजमी के व्यक्तिवृत्त सामिल किए थे।

द्वितीय सत्र

सुश्री कमलेश अग्रवाल [02817]भारत, वरिष्ठ चिकित्सक एवं प्रशिक्षक है। *मरीज से चिकित्सक तक* इस शीर्षक के अन्तर्गत, उन्होंने पंगु करने वाले गठिया रोग (आर्थ्राइटिस) से उनकी मुक्ति और प्रशिक्षक एवं चिकित्सक के रुप मे सेवा पूर्ण जीवन प्राप्ती के वैयक्तिक सफर का जिक्र किया। लंबी अवधि के गठिया रोग, नेत्रशोथ (प्रत्यूर्जता, पिटॉसिस, आंखो कि बिलनी), साइनस एवं धूल की प्रत्यूर्जता के उपचार संबंधी पांच उल्लेखनीय व्यक्तिवृत्त उन्होने प्रस्तुत किए। स्वामी द्वारा अनोखे मार्ग से मिले प्रथम एवं महासमाधी से पूर्व अंतिम दर्शन के लिए उन्होने कृतज्ञता का भाव भी व्यक्त किया।

श्री माकाटो ईशी [02779] पिएचडी जापान, द्वारा *An Educational Perspective on Vibrionics* प्रस्तुत किया गया। एज्युकेअर के साथ साथ व्हाइब्रियोनिक्स की सेवा करने वाले श्री माकाटो ने दोनो विभागो के बीच पाए जाने वाले आपसी आकर्षण का जिक्र किया। कभी कभी सताने वाले हमारे भीतर छिपे *घायल बालक,* जिसे स्वामी ने दिव्यत्व का हि अलग पहलू बताया है, उसका इलाज करने कि विधि उन्होने बतायी। सर्कायडॉसिस, टयूमर, व्यसनाधीनता, धमनी के विकार, विच्छेदन, फाइब्रो माइलेजिया, मिनिअर्स डिसीज, दिल का दौरा तथा फेफडों के कर्करोग के इलाज संबंधी व्यक्तिवृत्त उन्होने प्रस्तुत किए।

डॉ. दीपा मोदी [02802] एम डी यूके, ' डॉक्टर एक विभाग अनेक ' इस श्रेणी मे आने वाली सुश्री दीपा ने उनकी बाल्यावस्था मे स्वामी के साथ युगांडा मे हुई भेट का वर्णन किया। इंग्लैन्ड मे एम. डी. कि हैसियत से इलाज करते हुए उन्हे एलोपॅथि की मर्यादाओं का किस तरह एहसास हुआ और उन्होंने मरीजों को पीडा से मुक्ति दिलाने के लिए पर्यायी चिकित्सा पद्धति के मार्ग के स्वीकार संबंधी उनकी कहानी कथन की। पर्यायी चिकित्सा पद्धति की खोज ही उन्हे व्हाइब्रियोनिक्स तक ले आयी। अपनी प्रस्तुती मे उन्होने मधुमक्खी पर्याक्रमण, गलगंड, लंबी अवधी की बदहजमी, हार्मोनल असंतुलन से होने वाला जलावरोधन, लंबी अवधी से कान मे दर्द तथा गुर्दो मे होने वाली आवर्ती पथरी के इलाज संबंधी व्यक्तिवृत्त प्रस्तुत किए।

सुश्री ॲना सरस्वती कोन्जर [01228] स्लोवेनिया, वरिष्ठ चिकित्सक है, सभा मे उन्होंने *Diary of a Vibrionics Practitioner* प्रस्तुत की। व्हाइब्रियोनिक्स से हुए उल्लेखनीय रोग निवारण का अनुभव लेने के बाद उन्होंने इसे औरों तक पहुचाने के कार्य मे स्वयं को समर्पित कर दिया। कोडाइकॅनॉल तथा आंध्र प्रदेश एवं स्लोवेनिया के गांवो मे आयोजित किए शिबिरों के प्रेरणादायी अनुभवों का उन्होने वर्णन प्रस्तुत किया। कई असाधारण व्यक्तिवृत्त उन्होंने

प्रस्तुत किए जिनमे लकवा तथा मूर्छा से पुनः होश मे लाने हेतु किए सफल इलाज सामिल है। उनकी प्रस्तुती मे निद्रादोष एवं ग्लकोमा से आए अंधत्व जैसे दो सुदूरवर्ती उपचार (डिस्टन्स हिलिंग) तथा फोडे के इलाज का व्यक्तिवृत्त सामिल थे।

श्री जुलियस टॅन [02717] मलेशिया की प्रस्तुती का विषय था *Vibrionics and the Three Gunas*। सन 2007 से व्हाइब्रो चिकित्सा कर रहे श्री टॅन ने चर्चा के दौरान बताया कि उन्होने त्रिगुणों के ज्ञान का व्हाइब्रियोनिक्स कार्य मे मरीज की विशिष्ठ प्रकृति के इलाज मे किस तरह उपयोग किया। दूसरे दिन श्री टॅन ने जनन अक्षमता के मरीजों को व्हाइब्रियोनिक्स द्वारा किए गए इलाज की जानकारी दी। व्हाइब्रियोंनिक्स इलाज से जन्मे शिशु अपवादात्मक प्रतिभावान होते है यह उनका अनुभव है।

सुश्री एना शिनिलातो [02554] इटली, जो वरिष्ठ चिकित्सक तथा प्रशिक्षक है, उन्होंने *Faith Moves Mountains* इस विषय पर प्रस्तुती की तथा स्वामी ने उन्हे दर्शन के दौरान उनके द्वारा किए जाने वाले व्हाइब्रियोनिक्स के अभ्यास हेतु नाटकीय ढंग से परंतु स्पष्ट रुप से दिए पुष्टिकरण की कहानी सुनायी। उन्होने प्रेरणाप्रद व्यक्तिवृत्त प्रस्तुत किए जिनमे मिर्गी तथा संभाव्य खंडित मानसिकता के उपचार हेतु अस्पताल मे भरती 14 वर्ष का बालक सामिल है जिसका बर्ताव प्यार से खिलायी गई केवल दो व्हायब्रियोनिक्स गोलीयों से पूरी तरह बदल गया।

मंदीर के भोजन कक्ष मे स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था (चित्र देंखें) महाराष्ट्र के प्रतिनिधियों द्वारा की गई थी। सम्मेलन के दौरान परिदर्शक (ऑब्सर्वर) के रुप मे श्री सत्य सांई सेंन्ट्रल ट्रस्ट के संचार समन्वयक प्रोफेसर ए. अनंतरामन थे।

तृतीय सत्र

प्रश्नोत्तर सत्र के साथ दोपहर के कार्यक्रम की शुरुआत **डॉ. जीत के अग्रवाल** ने की। उन्होंने सोहम फाउन्डेशन के स्वामी आनंदा को मंच पर आमंत्रित किया। स्वर्गीय स्वामी नारायणी के साथ स्वामी आनंदा ने होमिओपॅथिक कॉम्बीनेशन्स का आविष्कार किया जिन्हे यथासमय सांई व्हाइब्रियोनिक्स मे समाविष्ट किया गया। स्वामी नारायणी ने ही डॉ. अग्रवाल के साथ हुई एक भेट के दौरान इस रोग निवारण पद्धति को *व्हाइब्रियोनिक्स* नाम दिया। सभी वरिष्ट चिकित्सक आज भी सोहम सिरीज की किताबों का इस्तमाल कर रहे है।

स्वामी आनंदा का पहला भाषण

स्वामी आनंदा ने अपने भाषण की शुरुआत मे ही अभिव्यक्ति दी कि चमत्कार की अपेक्षा करने वालों को वें निराश कर सकते है क्योंकि वें उन्हें चिकित्सक बनाने वाले सफर की सच्चाई सामने रखने वाले है। फिर उन्होंने यह भी बताया कि उनके जीवन में स्वामी वेंकटेशानंद और स्वामी नारायणी का प्रवेश किस तरह हुआ। दक्षिण अफ्रिका मे उन दिनों स्वामी वेंकटेशानंद की विभिन्न विषयों पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई थी जिसमे उनके मित्र ने स्वामी आनंदा को आमंत्रित किया। स्वामी आनंदा वहां पहुंचे जरुर परंतु उनका रवैया घमंड और अहम से भरा था। वें सोच रहे थे कि इस भीड और शोरभरे माहौल मे उनका क्यां काम है? परंतु पहला व्याख्यान सुनने के बाद उन्होने सभी व्याख्यान सुने यद्यपि उन्हे समझनेमे कठिनाइं हो रही थी क्योंकि स्वामी वेंकटेशानंद की वाणी अत्यंत कोमल थी। फिर एक अन्य मित्र ने माताजी (स्वामी नारायणी) के साथ उनकी मुलाकात तय की। स्वामी आनंदा मुलाकात के खिलाफ थे परंतु टाल नही सके। स्वामी नारायणी ने स्मितहास्य मुद्रा के साथ उनका स्वागत किया। कमरे मे उनके गुरु स्वामी वेंकटेशानंद की तस्वीर टंगी थी। सुबह 1 बजे तक चली चर्चा के अंत मे वें पूरी तरह बदले हुए इन्सान थे!

उपस्थित चिकित्सकों के लिए स्वामी आनंदा ने एक हृदयस्पर्शी संदेश दिया। वें बोले, हम नही जानते हम कहां से आए है और कहां जा रहे है, परंतु एक बात तय है कि आप सभी चिकित्सकों को बाबा ने बुलावा भेजा है अब आपके प्रत्युत्तर की बारी है। मार्ग मिल चुका है बस राह तय करनी है। परंतु जिंदगी अपनी राह चलती है। हम सोचते है कि हम अपना जीवन तय कर रहे है, यह भ्रान्ति है। हमे अपने अहंम को उसके उचित स्थानपर पहुंचाकर शरणागती सीखनी है। उन्हे जरा भी अंदाजा नही था कि वें आज यहां खडें होंगे बल्कि 70 साल की उम्र में वें छडी के सहारे चलने कि कल्पना कर रहें थे। हर घटना के लिए वें अत्यंन्त कृतज्ञ है और चिकित्सकों को उन्होने सलाह दी कि कृतज्ञता व्यक्त करने का मौकों की तलाश मे आप स्वयं कृतज्ञ बन सकते है, और भी अधिक द्वार खुलने लगते है। शरणागती के महत्व पर बल देते हुए स्वामी आनंदा बोले, शरणागती से भगवान के हाथ कार्य करने लगते है और अवर्णित सफलता प्राप्त होती है। वें बोले डॉ. अग्रवाल इतना महान कार्य बाबा की कृपा से ही कर रहे है। उन्होंने चिकित्सकों से निवेदन किया कि पहले आप अभिज्ञता रखें कि आप अनभिज्ञ है (to be aware that they are NOT aware)। स्वामी आनंदा ने चिकित्सकों कों आदेश दिया कि वें प्रेंमभाव के साथ सेवा जारी रखें एवं कभी न सोचे कि आप मरीज पर एहसान कर रहे है बल्कि आप मरीज के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करे कि उन्होने सेवा का अवसर प्रदान किया, ऐसी भावना से भगवान आपका कार्य अपने हाथो मे ले लेते है।

चिकित्सकों कि प्रस्तुतीयां जारी रही.....

श्री झबिझेक स्लोविक ने बताया कि उन्हे उनकी पत्नी सुश्री अलिक्जा स्लोविक [03040] पोलॅन्ड, जो विरिष्ट चिकित्सक है, की प्रसृति के दौरान व्हाइब्रियोनिक्स का सुखद अनुभव आया जिसके कारण उनका पूरा परिवार व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सक परिवार बन गया। उनके छोटे बेटे भी स्वयं के लिए अनायासहि योग्य कॉम्बो चुन लेते है। उनके समुदाय मे उन्होंने व्हाइब्रियोंनिक्स का प्रसार किया। श्री स्लोविक ने गर्भवती गाय तथा अनेक लंबी अवधी की बीमारीयों से पीडीत कुत्तें के सफल इलाज की रोचक जानकारी दी।

प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव [02859] पी.एच.डी. भारत, दिल्ली की समन्वयक तथा प्रशिक्षक है। उन्होंने वनस्पती पर किए व्हाइब्रियोनिक्स प्रयोग की जानकारी *A Spectacular Response of Plants to Vibrionics* के माध्यम से प्रस्तुत की। एक अनुभव मे पाया गया कि प्रेमभाव के साथ दिए गए CC1.2 Plant tonic से पौधों कि उगाई सर्वोत्तम होती है। उन्होंने सर जगदीश चंद्र बोस, ग्रोवर क्लीवलॅन्ड, स्टीफॅनो मान्कुसो तथा डॉ. कोन्स्टॅनिन कोरोत्कोव द्वारा किए गए अनुसंधान के नतीजों का भी हवाला दिया। प्रो. श्रीवास्तव ने श्रोताओं को स्मरण कराया कि ''सभी से प्रेम करो, सभी की सेवा करो'' यह घोषवाक्य वनस्पती पर भी लागू है। इस पद्धति के उपयोग से कृषि उपज मे वृद्धि की संभावना बहोत अधिक है।

प्रोफेसर सुझान वी [02793] पी.एच.डी यूएसए, वरिष्ट चिकित्सक ने उपस्थितों से प्रश्न किया, कौन किसका इलाज कर रहे है? गहराई से सोचनेपर हम पाएंगे कि मरीज और चिकित्सक दोनों की भूमिकाए आदान–प्रदान वाली है। हड्डी की टूट, गठिया रोग, लकवा, मानसिक प्रताडना तथा कर्करोग जैसी बीमारीयों के इलाज के अनुभवों का जिक्र करते हुए सुश्री वी ने बताया कि व्हाइब्रियोंनिक्स चिकित्सा मे स्वामी की शिक्षाओं का समावेश है। आसक्ति चोट पहुंचाती है, हम औरों से अलग नही है, प्रेमभाव हि रोग निवारण के द्वार खोलता है और मरीजों मे हम ईश्वर को पाते है। व्हाइब्रियोंनिक्स हमे एकात्मभाव समझाता है। केवल स्वामी ही रोग निवारण करते है।

सुश्री मरीना कोवाका [02295] ग्रीस, वरिष्ट चिकित्सक एवं ग्रीक समन्वयक है। उन्होंने साथी चिकित्सकों को परामर्श दिया कि मरीज के तनाव को स्वयं पर न ले *Don't Take on a Patient's Stress*। सुश्री कोवाका ने उनके मौलिक अनुभव का जिक्र करते हुए बताया कि कई बार मरीज को पूर्णरुपसें स्वस्थ कर पाने मे असफलता की वजह से वें चिंतीत हो जाती थी और उसी समय उन्हे एहसास हुआ कि इसकी वजह उनका अहंकार है क्योंकि वास्तव मे रोग निवारण करने वाला ईश्वर है। नए 108 कॉम्बो बक्से के उपयोगिता और अदभुत रोग निवारण के फलस्वरुप बढे आत्मविश्वास का वर्णन करते हुए वें बोली कि एक बार उन्होंने जल्दबाजीं मे स्वयं की अधकपारी के लिए CC11.4 Migraines की बजाए CC13.3 Bladder लिया परंतु स्वामी ने इस भूल के बावजूद भी उन्हे अधकपारी से राहत दिलायी।

चतुर्थ सत्र

श्रीमती पवलम [02799] गुणपती यूके, वरिष्ट चिकित्सक तथा प्रशिक्षक ने *A River of Compassion* इस शीर्षक के तहत अपने व्हाइब्रियोंनिक्स अनुभव कथन किए। केवल साढे तीन वर्षों कि अवधी मे हि उन्होंने 2500 से ज्यादा मरीजों का शतप्रतिशत सफलता के साथ इलाज किया। वें सक्रिय व्हाइब्रियोनिक्स प्रशिक्षक रही है जिन्होने सिएरा लिओन तथा यूके मे कार्यशालाए एवं शिबिरों का आयोजन किया है। दिल का दौरा, लंबी अवधी वाला दमा, लंबी अवधी से छींक की बीमारी, मूत्र नलिका मे संक्रमण तथा हड्डी के कर्करोग के सफल इलाज के व्यक्तिवृत्त उन्होंने प्रस्तुत किए। उनकी प्रेमभाव से भरी सेवां का लाभ अनेक मरीजों ने उठाया है। वें अपने मरीजों के साथ उनकी समस्या के विषय मे वार्तालाप करती है क्योंकि वें जानती है कि शारीरीक बीमारी कि वजह प्रायः मानसिक अथवा भावनिक पीडा होती है।

सुश्री वनिथा लोगनाथन [02894] यूके, ने ॲलोपॅथी से राहत न पाए गंभीर रुप से अकडे हुए कंधे के **श्री कनगराजन शण्मुगम [02820] यूके**, द्वारा किए सफल इलाज का अनुभव कथन किया। प्रभावित होकर वें स्वयं व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सक बन गई है। अगले दिन सुश्री लोगनाथन ने हांलहि मे स्वामी की उनके निवास पर हुई लीलाओं की जानकारी दी जिसमे उनके 108 सीसी कॉमन कॉम्बो बक्से पर, स्वामी की तस्वीर पर तथा उनके पासपोर्ट के फोटो पर ऐसे समय विभूति का सृजन पाया गया जब वें सम्मेलन मे उपस्थित होने के बारे मे सोच रही थी।

विदाई भाषणः डॉ. माईकेल रॅकॉफ, एम.डी. द्वारा

देह, मन और आत्मा को जोडने वाली –समपूरक औषधी, इस आशय का विदाई भाषण श्री माईकेल रॅकॉफ, एम.डी. यूएसए ने प्रस्तुत किया। उन्होंने उनकी पत्नी सुझान के व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सा के माध्यम से महसूस किए गए एवं स्वयं द्वारा अमरीका तथा भारत मे शिशुचिकित्सा तथा परामर्श के दौरान अनुभव किए गए मन–देह के संबंध के विषय मे बताया। उन्होंनें अमरीकी राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्था द्वारा मन–देह के औषधी अनुसंधान मे हुए विकास का भी जिक्र किया। अपने भाषण का सार उन्होंनें स्वामी द्वारा कहे गए छ मुद्यों के माध्यम सें प्रस्तुत कियाः *मन और आत्मा का इलाज करो; रोग का नही मरीज का इलाज करो; मरीज के लिए प्रेमभाव के साथ सहानुभूति प्रस्फुटित करो;*

व्यक्ति–व्यक्ति के बीच पारस्परिक दैवि कंपनों से हम सभी घिरे हुए है; दृढविश्वास रखों सब कुछ साध्य है; प्रेमभाव से स्वयं को भर दो, आपकी मुस्कराहट मरीज को आश्वस्त करती है।
विश्व भर के मरीजों के लिए निःशुल्क व्हाइब्रियोंनिक्स रोग निवारण सेवा विकसित करने वाले, दुनिया के हर कोने मे बसे व्हाइब्रो चिकित्सकों को प्रशिक्षण एवं सहायता प्रदान करने वाले, लगभग 20 वर्षो से अधिक काल सत्य सांई बाबा के प्रति अथाह समर्पण मे बिताने वाले **डॉ. जीत एवं श्रीमती हेमा अग्रवाल** के उत्साहपूर्ण स्वागत के साथ दिन भर चले कार्यक्रम का समापन हुआ।

अंत मे **स्वामी आनंदा** तथा **सुश्री पॅट हन्ट** द्वारा स्वामी की आरती की गई।

रात 8:00 बजे नॉर्थ इंडियन कॅन्टीन मे सभी प्रतिनिधियों एवं अतिथियों के लिए स्वादिष्ट भोजन का आयोजन किया गया।

++

सोमवार, जनवरी 27, 2014

स्वामी के पुराने मंदीर मे दूसरें दिन के कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 9:30 बजे हुई। प्रारंभ मे **डॉ. जीत के अग्रवाल** ने पहले दिन के वृत्तांत की समीक्षा की तथा अतिरिक्त **प्रश्नोत्तर** सत्र का संचालन किया।

स्वामी आनंदा का दूसरा भाषण

स्वामी आनंदा ने, सम्मेलन मे पधारकर ''वें गदगद हो गए'' ऐसा शालीनता पूर्वक कहतें हुए अपने भाषण की शुरुआत की। उन्होंनें पहले दिन के शरणागती का जिक्र किया तथा इस भाषण मे शरणागती से जुडे उनके प्रेरणादायी अनुभवों का कथन किया:

माताजी मे शरणागती की योग्यता थी। इस महान सेवा कार्य के लिए सारी दवांइयां वें स्वयं खरीदती थी। एक बार उन्हे लंदन से दक्षिण अफ्रिका आने वाले अपने किसी मित्र के हाथों कार्डस और मशीन बुलवानी थी। मशीन की कीमत थी 100 पाउन्ड जो उनके पास नही थे। वें अपने पूजागृह मे जाकर भगवान से बोली कि समाज के लिए आवश्यक समझते हो तो मेरी मदद करो। वें अपने मरीज जांचने लगी। सुबह 10 बजे मुहर लगा एक लिफाफा लेकर डाकिया आया। लिफाफे मे 100 पाउन्ड का चेक था जिस के पीछे अजीब टिप्पणी लिखी थी '' मेरा पीछा छोडो ''। कुछ दिनों पहलें माताजी की लंदन वाली सहेली स्पेन गई हुई थी। होटल की बालकनी मे बैठकर कॉफी पिते हुए उस सहेली को आवाज सुनायी दी कि *माताजी को 100 पाउन्ड भेजो*। बार बार यही सुनायी दे रहा था, अंत मे चिल्लाकर वह आवाज और भी तेज हुई और बोली *इसी वक्त भेजो*। उसी समय उस सहेली ने धनादेश पर दस्तखत किये, टिप्पणी लिखी, लिफाफे मे बंद किया, मुहर लगायी और डाक से माताजी को भेज दिया। दक्षिण अफ्रिका लौटने के बाद माताजी के साथ सहेली की भेट मे खुलासा हुआ कि वह धनादेश और टिप्पणी उसी सहेली कि लिखी थी। स्वामी आनंदा आगे बोले कि दिल की गहराई से शरण जाने पर, दूर कोई अज्ञात शक्ती क्रियाशील बनती है। केवल हमे सब कुछ जानकर यत्नपूर्वक शरण जाना है। और अगर हम न भी जान पाए कम से कम यह जानले कि हम अन्जान है।

स्वामी आनंदा ने अगले अनुभव मे बताया कि एक महिला को माथे पर मस्सा उभरा जिसे उनके डॉक्टर ने संघाती (मॅलिग्नन्ट) बताया था। वह महिला माताजी के चिकित्सालय मे आयी, माताजी ने मस्से को अंगुलि से छूकर मरीज को कुछ दवांए दी। उस महिला ने घर जाकर आईने मे देखा, मस्सा मिट चुका था। महिला ने उसी समय माताजी को फोन लगाकर पूंछा कि उन्होंने ऐसा क्यां किया जो मस्सा अदृष्य हो गया। माताजी ने जवाब दिया, चूंकि वह मस्सा उनकी क्षमता से बाहर था इस लिए उन्होंने हार मानली और बाकी कार्य भगवान ने किया।

स्वामी आनंदा ने चिकित्सकों को अनुबोध दिया कि आप यह कभी न सोचे कि आप रोग निवारण कर रहे है। हम रोग निवारण नही करते, हम केवल खाद्य पदार्थ देते है। रोग निवारण कैसे होता है, न हमे मालूम है और ना हि हमे जाानने कि आवश्यकता है। हमे केवल याद रखना याद रहे की सब बाबा कि कृपा है, ईश्वर कि कृपा है।

स्वामी ने दो और अनुभवों का कथन किया। विशेषज्ञ से तीव्र पीठ दर्द के इलाज हेतु परामर्श लेकर आयी एक महिला को इनके चिकित्सालय मे राहत मिलने पर, उनके डॉक्टर स्वयं स्वामी आनंदा के चिकित्सालय पहुंचे यह जानने के लिए की महिला को क्यां दवां दी गई। डॉक्टर की प्रतिक्रिया यह थी की उन्हे कॉम्बीनेशन समझमे नही आया परंतु क्ष–किरणों की जांच से पता चला था कि उस महिला का शल्य चिकित्सा के बिना चल पाना असंभव था। एक अन्य अनुभव का वर्णन करते हुए स्वामी आनंदा बोले कि 1987 मे शुरु किया गया उनका चिकित्सालय सन 1992–93 के दौरान कर्ज मे डूब गया। उसी समय कहीं से एक व्यक्ति ने आकर उन्हें कर्ज मे पर्याप्त रकम दी जिसकी मदद से केवल दो ही वर्षों मे वें कर्ज मुक्त हो गए। ईश्वर आपकी समस्त चिंताओं का ख्याल रखता है, केवल इस बात का एहसास रखते हुए जागरुक रहो, जागरुक रहो, जागरुक रहो।

स्वामी आनंदा ने भाषण का समापन होमिओपॅथि चिकित्सा हेतु स्वामी वेंकटेशानंदा के साथ कार मे सफर दौरान हुए ब्रेक फेल कि कहानी सुना कर किया। कार ढलान पर होने के बावजूद भी स्वामी वेंकटेशानंदा ने स्वामी आनंदा को कार चलाते रहने का निर्देश दिया। 52 मील की दूरी तय कर अपने गंतव्य पहुंचनेपर स्वामी आनंदा ने पाया की कार के ब्रेक सामान्य रुप से कार्य कर रहे है। इस पर स्वामी वेंकटेशानंदा कि टिप्पणी यह थी की ''अगर (सेवा का) छोटासा प्रेमभाव कार की मरम्मत कर सकता है तब इन्सान के हृदय के लिए वह क्यां नही कर सकता?'' स्वामी आनंदा आगे कहते है कि हमे सदैव स्मरण का प्रयास करना चाहिए कि : जब हम प्रेमभाव जागृत करते है, संसार मे ईश्वर सक्रिय हो जाता है। सदैव जागरुक रहो, जागरुक रहो, जागरुक रहो। जब भी आप कुछ कहते हो, स्वयं से पूछो की इसमे मेरा प्रेमभाव व्यक्त हो रहा है या फिर अहंभाव व्यक्त हो रहा है? प्रेमभाव मे आप चमत्कारिक क्षमता पाओगे।

डॉ. अनंत गायतोंडे का भाषण

डॉ. अनंत गायतोंडे ने उनके एन्डोक्राइनोलोजि तथा बॅक्टेरियालॉजि के डॉक्टरी एवं प्राध्यापकीय जीवन के मूल्यवान अनुभवों के आधार पर एलोपॅथि पर संक्षिप्त मे अंर्तदृष्टि डाली। पाठशालाओंमे हमे पढाया गया कि 'एक और एक दो' होते है परंतु एलोपॅथि की आधुनिक चिकित्सा इस भ्रम मे नजर आती है कि 'एक और एक शून्य' होता है – रोग धन दवां बराबर निरोग। इसके विपरित रोग को खत्म करने के लिए दी जाने वाली दवां ही बीमारी बढाती है। कर्करोग के मरीजों की मृत्यु प्रायः कर्करोग से नही बल्कि कर्करोग के परम्परागत इलाज से होती है क्योंकि यह दवांए उनकी रोग प्रतिकारक प्रणाली मे गंभीर समझौता करते हुए मरीज को प्राणघातक रोगों के प्रति अतिसंवेदनशील बनाती है।

व्हाइब्रियोंनिक्स की उत्पत्ती मे स्वामी के वरदहस्त पर बल देते हुए वें बोले की स्वामी ने बारबार अपने प्रवचनों मे कहा है पांचो अंगुलियां पंचमहाभूतों (पृथ्वी, वायू, अग्नि, जल और आकाश) का प्रतिनिधित्व करती है। उनके तेजस्वी कंपन भारतीय पद्धति से भोजन ग्रहण करने पर अन्न मे प्रवेशित होते है। स्वामी ने उनके ''सब से प्रेम करो, सबकी सेवा करो'' की सीख के माध्यम से कंपनों के गहन ज्ञान को स्पष्ट किया है। येशू भी यही कहना चाहते थे जब उन्होंने कहां की ''पडोंसी से उतना हि प्रेम करो जितना तुम स्वयं से करते हो।'' दोनों ने ही हृदय मे विराजमान अमर्याद, सर्वव्यापक प्रेमरुपी उर्जा की सीख दी है। इसके द्वारा सब कुछ संभव है।

उन्होंनें सुझाव दिया की विभिन्न अवयवों के बीच आपसी प्रेम के रिश्ते पर आधारित चीनी दवां, चिकित्सकों को रोग निदान एवं इलाज मे सहायक हो सकती है। डॉ. गायतोंडे ने डाली अंर्तदृष्टि से व्हाइब्रियोनिक्स रोग निवारण पद्धति के और अधिक अभ्यास की संभावना बढ गई है।

डॉ. सारा पवन का भाषण

डॉ. सारा पवन, एम.डी., सेवा निवृत्त एनेस्थेशियालॉजिस्ट ने *प्रतिदिन के स्वास्थ्य* संबंधी सुझाव हेतु विचारोत्तेजक पावर पॉइन्ट प्रस्तती की। उन्होंने बताया की संपूर्ण स्वास्थ्य साकल्यवादी होता है जो आरोग्य के संरक्षण के साथ रोग निवारण करता हैं। उन्होंनें सभी चिकित्सा पद्धतियों मे (होमिओपॅथी, एलोपॅथी और नेचरोपॅथी) पशूपथी भगवान सांई को ही रोग निवारण कर्ता माना। स्वामी से प्रेरणा पाकर उन्होंने शरीर और कार की समानता को रंगीन उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया। अंग्रेजी शब्द HEALTH को उन्होने निम्नानुसार विस्तारित कियाः

H Hari (God); Source of Everything
E Exercise, Effort & Diet for Body and Mind
A Awareness & Acceptance
L Love for Life; Level-Headedness
T Thoughts; Shun Negative Thinking
H Harmony, Happiness & Humour

डॉ. पवन ने उनके दोनो हाथों कि बलहीनता और फिर स्वामी की कृपा से बलवापसी का विलक्षण अनुभव कथन किया। उन्होंनें सुख संपन्न एवं लंबी आयु के लिए मानवीय मूल्यों और धैर्य की भूमिका पर बल दिया तथा भाषण की समाप्ती 'Live in ease, otherwise be in dis-ease' इस चेतावनी के साथ की।

कार्यक्रम के समापन मे श्रोताओं ने सांई व्हाइब्रियोनिक्स तथा विश्व भर के जरुरत मंदो की सहायता मे प्रयासों के लिए पुनश्च डॉ. अग्रवाल तथा श्रीमती अग्रवाल के प्रति खडें होकर माल्यार्पण के साथ अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

स्वामी की अदभुत लीला (चित्र देखे) के साथ 108 सी.सी बक्सों कि रिचार्जीन्ग हुई और तीन ओंकार, समस्त लोका सुखिनो भवन्तु के साथ स्वामी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस अदभुत समारोह की समाप्ती हुई।

International Association of Sai Vibrionics Practitioners
First International Conference of Sai Vibrionics
25-27 January 2014 Puttaparthi
Contact: Dr J K Aggarwal 08555-287181. 0989798937 email: 99sairam@vibrionics.org
NO CELL PHONES!
NO CELL PHONES!

****

ॐ सामाजिक संचार माध्यम के उपयोग से सांई व्हाइब्रियोंनिक्स के संदेश का प्रसार ॐ

दिनांक 27 जनवरी 2014 को सम्मेलन की तस्वीरों के साथ www.radiosai.org रेडिओ सांई पर प्रसारित लेख के माध्यम से सांई व्हाइब्रियोंनिक्स अनुग्रहित हुआ। अगर आप को यह लेख पसंद आया हो तब रेडिओ सांई की वेब साईट पर लिख कर उन्हे अवगत कराए। अपने मरीजों, परिवार जनों एवं मित्रों को भी लिखने का सुझाव दे।

For practitioners, friends and patients on Facebook, Radio Sai also released the article. Be sure to 'Friend' Radio Sai then go down to the January 27 article and "Like" the article.

****

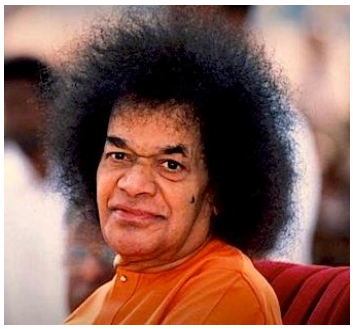

ॐ प्रधान रोग निवारण कर्ता के दैवी वचन ॐ

"आत्मविश्वास जगाओं और ईश्वर पर अटल श्रद्धा रखो। अचल श्रद्धा के साथ मानव जातिं की सेवा करो तथा अनुकरणीय जीवन जियो।" .....**सत्य सांई बाबा**

"सेवा क्यां है? लोग कहते है अच्छा काम करना सेवा है। सेवा को अच्छा काम न समझो। मै दूसरों के लिए अच्छा काम कर रहा हुं यह सकारात्मक भावना नही है। सेवा को सही भाव से देखना हो तो इसे भगवान का काम मानिए। सच्ची सेवां वह है जब आप अपनी हर कृति को भगवान का कार्य मानते हो।" ..... **सत्य सांई बाबा**

Love All, Serve All, Help Ever Hurt Never, Book Commemorating Sathya Sai Baba's 80th Birthday, 2005

****

ॐ सूचनाए ॐ

आगामी वर्कशाप

- **भारत** नई दिल्ली रिफ्रेशर सेमिनार सभी चिकित्सकों के लिए दिनांक 23 मार्च 2014, एसव्हीपी वर्कशापए 20–24 मार्च तथा एव्हीपी वर्कशॉप 12–13 अप्रैल संपर्क संगीता at trainer1.delhi@vibrionics.org
- **यूके** लंदनः एव्हीपी वर्कशॉप 22–23 मार्च 2014 संपर्क जेराम at jeramjoe@gmail.com
- **भारत** पुट्टपर्ती एव्हीपी तथा एसव्हीपी वर्कशाप दिनांक 18–22 अप्रैल 2014, संपर्क हेम at 99sairam@vibrionics.org

All Trainers: If you have a workshop scheduled, send details to: 99sairam@vibrionics.org